राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन

पुरुषोत्तम दास टण्डन को राजर्षि के नाम से भी जाना जाता है | हिंदी भाषा की प्रगति और विकास में उनका अप्रतिम योगदान है | उनका जन्म 1 अगस्त, 1882 को इलाहाबाद के मीरगंज मुहल्ले में एक सम्पन्न खत्री परिवार में हुआ था | उनके पिता का नाम श्री शालिगराम टण्डन था | वे राधास्वामी सम्प्रदाय में दीक्षित थे | सम्प्रदाय में दीक्षा लेने पर उनका नाम प्रेम सरन रखा गया था |

उन्होंने 1904 में बी.ए. तथा 1907 में एम.ए. इतिहास की शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने कानून की परीक्षा पास की | वर्ष 1910 में प्रयाग हिंदी साहित्य सम्मेलन के संस्थापक अध्यक्ष मालवीय जी ने टंडन जी को सम्मेलन का महामंत्री नियुक्त किया | टंडन जी ने वर्ष 1908 में जब वकालत शुरू की तब ही वे अभ्युदय का सम्पादन करने लगे थे | पं. बालकृष्ण भट्ट ने अनुरोध पर प्रदीप में लिखने लगे थे तथा अपनी रोचक और ओजस्वी लेखनी से सबको प्रभावित किया | टंडन जी का कार्यक्षेत्र बहुत व्यापक था | राजनीति, साहित्य, संस्कृति, समाज सेवा, अध्यात्म-चिंतन आदि अनेक क्षेत्रों में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा | उनका व्यक्तित्व कर्म प्रधान था | वे अपने सिद्धांतों और विश्वासों को कार्य रूप में परिणत करने की अदम्य इच्छाशक्ति रखते थे |

उनके ही आत्मबल के परिणामस्वरूप साहित्य सम्मेलन की विशाल इमारत खड़ी हुई थी और उनकी ही चेष्टाओं से राष्ट्र भाषा के रूप में हिंदी को स्वीकृति मिली | उनकी हिंदी सेवा के संबंध में भारतीय आत्मा पंडित माखनलाल चतुर्वेदी की यह उक्ति बड़ी सार्थक है - हिंदी सेवा, हिंदी की रक्षार्थ सारे त्याग, चेष्टाएं, पुरुषार्थ एवं प्राणाहुति का सम्मिलित नाम ही है - पुरुषोत्तमदास टण्डन | " दूसरे विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद देश की संविधान सभा बनी | टंडन जी उसके सदस्य चुने गए | संविधान सभा में भी टंडन जी के भाषण एवं हिंदी के पक्ष में प्रस्तुत अकाट्य दलीलों से प्रभावित हो पूरे सदन ने एक स्वर से हिंदी को राष्ट्र भाषा बनाना स्वीकार किया | वर्ष 1961 में भारत सरकार ने उन्हें भारत रत्न से अलंकृत किया |

1 जुलाई 1962 को 80 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया |